आडम्बर प्रिय नहीं, धर्म प्रिय बने

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

समाज में मानव थोड़ी सी उन्नति करने पर अहंकारी बन जाता है। व्यक्ति अपना वर्चस्व दिखाना चाहता है। हर कार्य में आडम्बर या दिखावा करके लोगों से प्रशंसा प्राप्त करना चाहता है। इस प्रकार का आडम्बर मनुष्य के लिए ठीक नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से अगर सोचे तो मनुष्य का यह कर्त्ताभाव ही कर्मबन्धन का कारण है। आडम्बर का अर्थ है बाहरी दिखावा। दिखावा करना ठीक है, किन्तु दिखावा जहां प्रदर्शन और आडम्बर का रूप ले लेता है वह ठीक नहीं है। आजकल विवाह या किसी सामाजिक कार्यक्रम में बहुत दिखावा किया जाता है। ऐसे अवसरों पर व्यक्ति अपने अहंकार का प्रदर्शन करता है और समाज से प्रशंसा प्राप्त करना चाहता है। उसे यह पता नहीं है कि चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात समाज भी ऐसे लोगों की मिथ्या प्रशंसा करके धन व्यय कराता है। जबतक धन का नशा रहता है तब तक तो आडम्बर खुब किया जाता है। किन्तु जैसे ही धन का नशा उतरा उसको अपनी वास्तविक हकीकत मालूम हो जाती है। समाज में आडम्बर को देखकर के प्रतिस्पर्धा की भावना पनपती है। उसको लगता है कि जब हमारा पड़ोसी एक छोटे से कार्यक्रम में इतना साज सजावट किया है तो मैं क्यों न करूं। पास में पैसा हो या न हो किन्तु लोगों को दिखाने के लिए कर्ज लेकर ऐसे दिखावे किये जाते है। समाज में ऊँच और नीच के बीच भेद की खाईं का एक कारण प्रदर्शन भी है। प्रदर्शन से फिजूल खर्ची को बढ़ावा मिलता है। लोगों को अनावश्यक कार्यों में धन व्यय न करके समाज सेवा के कार्यों में धर्म को लगाना चाहिए। हमारे देश में परोपकार और सेवा को बहुत महत्व दिया गया है। यदि धन अधिक है तो गरीबों और असहाय लोगों में वितरण कर देना चाहिए। रैनवसेरा का निर्माण कराना चाहिए, गरीब कन्याओं का विवाह कराना चाहिए, शिक्षा और चिकित्सा पर धन व्यय करके समाज की मुख्य धारा से जुड़ना चाहिए।

हमारे देश में नर सेवा नारायण सेवा कही जाती है। नर सेवा करना ही धार्मिकता को बढ़ावा देना है। समाज के ऐसे कुछ कार्य हैं, जिनको करने से आदमी धर्म प्रिय बन सकता है। धर्म करना सबसे उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम ओर तप को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। ऐसा करने वालों को देवता भी नमस्कार करते है। सर्वे भवन्तु सुखिन की भावना भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र है। विश्व के सभी प्राणियों के प्रति संयम करना अहिंसा है। मानव धर्म साश्वत धर्म है। जीवदया, इच्छापरिमाण, परोपकार, समभाव करने से समाज में नैतिकता को बढ़ावा मिलता है। ऐसा करने से मन में नकारात्मक विचार नहीं आते। समाज में रचनात्मकता बढ़ती है। भोगवादी संस्कृति से आडम्बर को बढ़ावा मिलता है। लोग अपनी आवश्यकता से अधिक संचय कर समाज में दिखावा करते हैं।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। इस संस्कृति में आडम्बर को महत्व नहीं दिया गया है। हमारी संस्कृति में इन्द्रिय जगत से परे परमार्थ जगत की चेतना को जागृत करके आत्मतत्व को जानने का उपदेश दिया गया है। प्रायः रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है। भोगवादी संस्कृति इन्द्रिय सुख से सम्बन्धित है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक सुख से सम्बन्धित है। पाश्चात्य संस्कृति आडम्बरयुक्त और भोगवादी संस्कृति है। वहां पर खाओ पिओ और मस्त रहो को महत्व दिया जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति में खाना–पीना, मस्त रहना कोई महत्व नहीं रखता। भोगवादी संस्कृति रोग और बीमारियों को बढ़ाती है। बड़े–बड़े उपभोक्ता भंडारों में आकर्षक समान भरे पड़े रहते हैं। वहां के बाह्य आडम्बर को देखकर जब ग्राहक वहां जाता है तो आवश्यकता न रहने पर भी उन समानों की तरफ आकर्षित होता है और आवश्यक–अनावश्यक सभी वस्तुओं की खरीददारी करता है। वहां पर वस्तुओं की साज–सज्जा और रखने का ढ़ंग इस प्रकार से रहता है कि उनकी तरफ इन्द्रियां स्वयं ही आकर्षित हो जाती हैं। यह प्रचलन पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण है। आज से बीस तीस वर्ष पहले उपभोक्ता भंडारों का प्रचलन नहीं था। सड़कों के किनारे या बाजारों में दुकाने लगी रहती थी। ग्राहक वहां जाकर अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुएं खरीददता था। जितनी आवश्यकता होती थी उतना ही सामान खरीदा जाता था। आज के नये युग में वस्तुओं की भरमार है। लोग गुणवत्ता पर नहीं आकर्षण और

आडम्बर पर ज्यादा ध्यान देते हैं। आजकल इन उपभोक्ता भंडारों से सामान खरीदना एक फैशन बन हो गया है। जिनके पास अधिक पैसा है, वे तो वहां सामान खरीदते हैं उन्हीं को देखकर जो कम पैसे वाले हैं वे भी इन्हीं भंडारों से सामान खरीदते हैं। इसके कारण धन का नुकसान हो रहा है। ये कम्पनियां जिस देश में जाती हैं, उनका एकमात्र उद्देश्य धन की उगाही करना होता है। विकासशील या अल्पविकसित देशों में ये कम्पनियां खूब शोषण कर रही हैं। इन भंडारों में एक ही छत के नीचें प्रायः उपभोग की सभी वस्तुएं इकट्ठा मिल जाती हैं, इसीलिए ग्राहक भी इनकी तरफ अधिक आकर्षित होते हैं। एक व्यक्ति को पहनने के लिए दो–तीन जोड़ी वस्त्र, खाने के लिए भोजन, पीने के लिए पानी, पढ़ने के लिए विद्यालय और चिकित्सा यही मानव की आवश्यकता है। इसलिए अधिक संग्रह नहीं करना चाहिए। यह संग्रह की प्रवृत्ति आडम्बर को बढ़ावा दे रही है, साथ ही साथ प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।